Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIII, January-2014, ISSN 2230-7540

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात स्त्री शिक्षा के विकास का संक्षिप्त अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIII, January-2014, ISSN 2230-7540

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात स्त्री शिक्षा के विकास का संक्षिप्त अध्ययन

Raj Singh

Research Scholar, Singhania University, Rajasthan

सार – *प्राचीन तथा मध्यकालीन समाज में स्त्रियों को अज्ञानता के आवरण में रखकर पिता, पति या पुत्र के दासत्व को स्वीकार करने के कर्त्तव्य का ज्ञान देने मात्र को ही उस समय की स्त्री शिक्षा की इतिश्री समझा जाता था। परन्तु आज परिस्थितियाँ बदल गयी हैं, आज स्त्रियाँ शिक्षा प्राप्त करके समाज के महत्वपूर्ण कार्यों में पुरुषों के साथ योगदान कर रही हैं, वे आज घर की चार दीवारी के अन्दर घुटकर भाग्य के भरोसे बैठी, यन्त्रवत कार्य करने वाली अनपढ़ कठपुतली मात्र ही नहीं है। वरन वे अज्ञानता के आवरण से बाहर आकर तथा ज्ञान के आलोक में परिपूर्ण होकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों से स्पर्धा करने के लिए तत्पर है।*

----------X----------

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में– महिलाओं को सदैव असहायता तथा दूसरों पर दासवत निर्भरता का प्रशिक्षण दिया गया। वास्तव में आज स्त्रियों की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ गये हैं। स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन का प्रमुख श्रेय स्त्री शिक्षा के प्रसार तथा प्रचार को है। स्त्री शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या थी तथा वर्तमान में इसकी स्थिति तथा समस्याऐं क्या है, इन्हीं बातों का अध्ययन हम इस लघु शोध पत्र में करेंगें। हमारा देश 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ और हमारी शिक्षा का पदार्पण आधुनिक भारत के सन्दर्भ में हुआ।

स्वतंत्र भारत में महिला की सामाजिक स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहा था। महिला जिन बन्धनों में बंधी हुई थी, वह धीरे–धीरे बन्धनों से मुक्त होती जा रही थी। जिस स्वतंत्रता से उसे वंचित कर दिया गया था, वह उसे पुनः प्राप्त हो रही है। महिलाओं के प्रति पुरुषों का दृष्टिकोण बदल रहा है। उनकी मान्यताऐं भी बदल रही हैं। यथार्थ में महिलाओं ने अपने वास्तविक विकल्प को जानना और उसको पहिचानना शुरू कर दिया है। और वह अपनी गिरी हुई दशा के प्रति सचेत हुई है। यही कारण है कि आधुनिक भारत महिला जागरण का युग बन गया है, और महिला शिक्षा के सभी क्षेत्रों में विलक्षण क्रान्ति दिखाई दे रही है आज हम देखते हैं कि लड़कियां कला और विज्ञान के अतिरिक्त गृह विज्ञान, हस्तकला, शिल्पकला की भी शिक्षा प्राप्त करने को भी स्वतंत्र हैं। मैडिकल और इन्जीनियरिंग कॉलेजों में लड़कियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। उच्च स्तर तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में सबसे अधिक अंक प्राप्त कर महिलाओं ने सिद्ध कर दिया है कि उनका मानसिक स्तर पुरुषों से किसी प्रकार कम नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

स्वामी सुषमा (1990) ने विदर्भ की महिलाओं की विभिन्न स्तर प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक की शैक्षिक प्रगति (1947 से 1987) तक का अध्ययन ''ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ वीमेन्स एजुकेशन इन विदर्भा फ्राम 1947 टू 1987'' के अन्तर्गत किया जिसके उद्देश्य– (1) विदर्भ की महिलाओं की सामाजिक अवस्था और शिक्षा की स्थिति का अध्ययन करना। (2) महिलाओं की पिछड़ी शैक्षिक दशा के लिए जिम्मेदार कारक का पता लगाना। इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक व सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया विदर्भ के सभी 9 जिलों को लिया गया। आंकड़ों का संकलन द्वितीयक स्रोत से प्राप्त किया। तालिकांकित आंकड़ों का बार डायग्राम लिनियर ग्राफ व पाई चित्र द्वारा प्रदर्शन किया गया। जिसकी मुख्य प्राप्तियां निम्न थीं– (1) पूर्व प्राथमिक स्तर पर सन् 1978 से 1985 तक लड़कों की संख्या हमेशा लड़कियों से ज्यादा थी। (2) स्वतंत्रता उपरान्त प्राथमिक स्तर पर महिला की शिक्षा में वृद्धि पायी गयी। (3) सैकन्ड्री स्तर पर अवरोधन व बाधा की समस्या लड़कियों में लड़कों से अधिक पायी गयी। (4) पृथक कन्या विद्यालय व महिला अध्यापकों की कमी पायी गयी। (5) उच्च शैक्षिक स्तर पर पढ़ी लिखी लड़कियों व लड़कों की संख्या से अधिक अन्तर पाया गया।

उपमन्यु, कल्पना (1991) ने कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सामाजिक मनोवैज्ञानिक चरों का विवाह सम्बन्धी समायोजन का अध्ययन ''ए स्टडी ऑफ मेरा टाइल एडजेस्टमैन्ट ऑफ वर्किंग एण्ड नॉन–वर्किंग वीमेन इन रिलेशन टू सरटेन सोशियो–साइकोलोजिकल वैरियेबिल'' के अन्तर्गत किया। जिसके उद्देश्य– (1) उत्तर प्रदेश व राजस्थान की कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं की शारीरिक अवस्था, वैवाहिक समायोजन, चिन्तन स्तर भावात्मक परिपक्वता व व्यक्ति के लक्षणों की तुलना करना। इस अध्ययन के लिए विवरणात्मक विधि को अपनाया गया है। जिसमें 540 कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं का चयन वर्गबद्ध न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। इसमें 270 महिलाऐं राजस्थान तथा 270 महिलाऐं उत्तर प्रदेश से चयन की गयी जिसकी मुख्य प्राप्तियां– (1) राजस्थान की महिलाओं का उत्तर प्रदेश की महिलाओं के मुकाबले शारी के प्रति दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक था। (2) कामकाजी महिलाओं का चिन्तर स्तर गैर कामकाजी महिलाओं के चिन्तर स्तर से कम था। (3) गैर कामकाजी महिलाओं में तनाव कामकाजी महिलाओं से कुछ ज्यादा था लेकिन यह अर्थपूर्ण नहीं था। (4) राजस्थान की महिलाओं में स्थिरता ओर सापेक्षता उत्तर प्रदेश की कामकाजी महिलाओं से अधिक थी। (5) गैर कामकाजी महिलाऐं कामकाजी महिलाओं के मुकाबले अधिक भावात्मक परिपक्व थीं।

मुतालिक, स्वाति (1991) ने औपचारिक शिक्षा का महिलाओं की सामाजिक जागरूकता पर प्रभाव को जानने के लिए अपने अध्ययन ''एजुकेशन एण्ड सोशल एवैयरनैस अमंग वीमैन'' के अन्तर्गत किया। जिसके उद्देश्य– (1) औपचारिक शिक्षा का महिलाओं की सामाजिक जागरूकता पर प्रभाव का अध्ययन

www.ignited.in

करना। (2) महिलाओं में सामाजिक जागरूकता के स्तर का अध्ययन करना। इस अध्ययन के लिए पूना शहर की 75 महिलाओं का एक प्रतिरूप लिया जिनकी आयु 30 वर्ष से 35 वर्ष के मध्य थी। जिनकी प्राप्तियाँ– (1) शिक्षा और सामाजिक जागरूकता में अर्थ पूर्ण सहसम्बन्ध पाया गया। (2) जाति का सामाजिक जागरूकता पर अर्थपूर्ण प्रभाव पाया गया। (3) निम्न जाति में सामाजिक जागरूकता कम पायी गयी। (4) उच्च शिक्षित महिलाऐं जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी, उन महिलाओं में उच्च सामाजिक जागरूकता पायी गयी लेकिन कार्य के प्रति तैयारी का उनमें अभाव था उन महिलाओं को कार्य के प्रति प्रेरित करने के लिए अभिप्रेरणा की आवश्यकता थी।

शोध विधि

साधारणतया मौलिक अनुसधानों के द्वारा तीन प्रकार के प्रश्नों का उत्तर ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है इस प्रकार अनुसंधानों में मूलरूप से तीन विषयों का प्रयोग किया जा सकता है।

- ऐतिहासिक अथवा वर्णनात्मक शोध विधि।
- सर्वेक्षण शोध विधि
- प्रयोगात्मक शोध विधि

आंकड़ों का विश्लेषण

कथन–1ए छात्राओं के अध्यापक–अध्यापिकाऐं विद्यालयों में छात्राओं का सहयोग करते है–

तालिका 1

कथन के प्रति प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया	आंकड़े (%) में
हाँ	88%
नहीं	12%

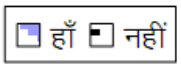

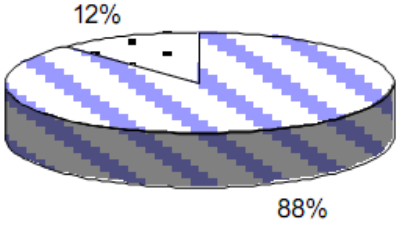

उपर्युक्त तालिका संख्या 1 के अनुसार 88: छात्रों ने अपनी प्रतिक्रिया हाँ में तथा 12: छात्रों ने अपनी प्रतिक्रिया नहीं में व्यक्त की, अत: इससे यह स्पष्ट होता है कि अध्यापक–अध्यापिकायें विद्यालयों में छात्रों का अत्यधिक सहयोग करते है।

कथन–2ए छात्राओं को उनके मनपसन्द विषय चुनने का अधिकार दिया जाता है–

तालिका 2

कथन के प्रति प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया	आंकड़े (%) में
हाँ	83%
नहीं	17%

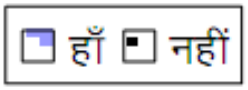

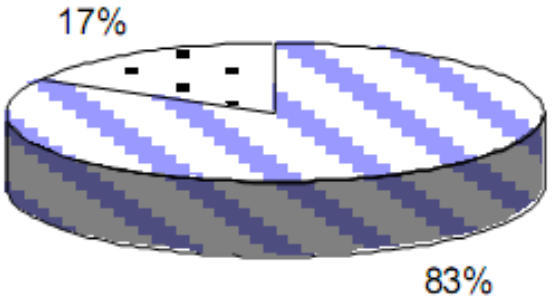

प्रस्तुत तालिका संख्या 2 से यह प्रदर्शित होता है कि 83: छात्रों ने अपनी प्रतिक्रिया हाँ में तथा 17: छात्रों ने अपनी प्रतिक्रिया नहीं में व्यक्त की। अत: परिणाम से यह विदित होता है कि छात्रों को उनके पसन्द के विषय चुनने का अधिकार दिया जाता है।

कथन–3ए शिक्षा के अभाव में स्त्री का स्थान दयनीय है–

तालिका 3

कथन के प्रति प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया	आंकड़े (%) में
हाँ	64%
नहीं	36%

www.ignited.in

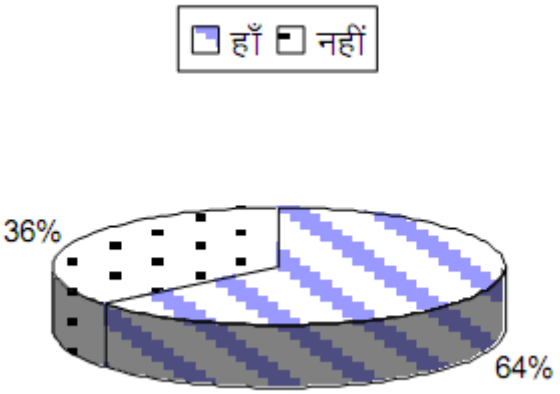

प्रस्तुत तालिका संख्या 3 द्वारा यह ज्ञात होता है कि 64: छात्रों ने हाँ में तथा 36: छात्रों ने अपनी प्रतिक्रिया नहीं में व्यक्त की। अतः आधे से अधिक व्यक्ति यह सोचते हैं कि आज भी स्त्री का स्थान दयनीय है।

कथन–4. शिक्षित स्त्री राष्ट्र के निर्माण में सहयोगी होती है–

तालिका 4

कथन के प्रति प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया	आंकड़े (%) में
हाँ	99%
नहीं	1%

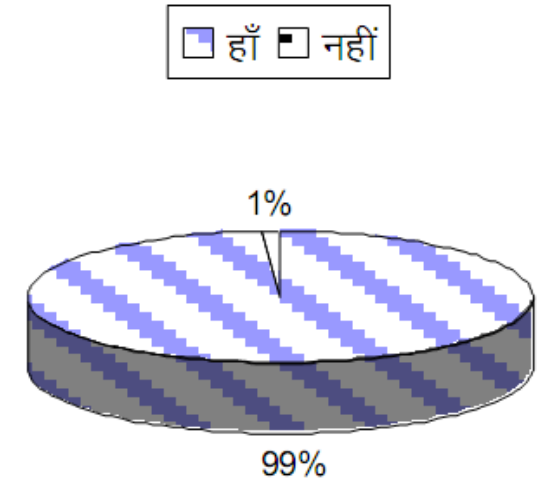

तालिका संख्या 4 से यह स्पष्ट होता है कि 99: छात्रों ने हाँ को अपना विकल्प तथा 1: छात्रों ने नहीं को अपना विकल्प चुना। कथन संख्या 04 का 99: छात्रों का हाँ विकल्प चुनने का अर्थ है कि शिक्षित स्त्री राष्ट्र के निर्माण में सहायक होती है।

अध्ययन का महत्व

शिक्षा के क्षेत्र में किया जाने वाला शोध शैक्षिक रूप से महत्वपूर्ण होता है शिक्षा के क्षेत्र में उसके विकास के लिए शोध के प्राप्त निष्कर्ष बहुत लाभान्वित होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी शोध की क्या उपयोगिता है और उसके महत्व को उस प्रकरण या उस समस्या विशेष की उपयोगिता को दर्शाता है। प्रस्तुत शोध प्रकरण में वर्तमान में उपस्थित एक विशेष समस्या को लिया गया है। उस पर विशेष अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं और इन प्राप्त निष्कर्षों को स्त्री शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त कर स्त्री शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओं को दूर करके विकास के पथ पर अग्रसर करना है। यह ही इस शोध कार्य का शैक्षिक निहितार्थ है।

ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल जे.सी. (2010), भारतीय शिक्षा पद्धति संरचना और समस्याऐं, आर्य बुक डिपो दिल्ली।

2. डा.गुप्ता एस.पी. (2009), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास, एवं समस्याऐं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद (पृ0 115–117)

3. लाल, समन बिहारी (2001), भारतीय शिक्षा का विकास एवं उनकी समस्याऐं। रस्तौगी प्रकाशन मेरठ (पृ0 311)

4. गोयल, तरूण (2005), सामान्य ज्ञान। अरिहन्त पब्लिकेशन इण्डिया मेरठ। (पृ0 45)

5. पाठक पी.डी. (2010), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याऐं। विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

6. वर्मा जी.एस. (2005), आधुनिक भारतीय शिक्षा एवं समस्याऐं, लायल बुक डिपो मेरठ।

7. त्यागी, गुरसरन दास (2002), भारत में शिक्षा का विकास, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

8. शर्मा, आर.ए. (2012), शिक्षा अनुसंधान आरकृलाल बुक डिपो मेरठ।

9. कपिल एच.के. (2008), सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।